उर्वशी पुरूरवा

वैदिक संस्कृति की पहली प्रेमकथा

संतोष श्रीवास्तव

उर्वशी पुरूरवा

वैदिक संस्कृति की पहली प्रेमकथा

संतोष श्रीवास्तव

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जुलाई, 2026

© संतोष श्रीवास्तव

उर्वशी चूंकि स्वर्ग की अप्सरा थी। अतः उसमें भूलोक की स्त्री को आरोपित कर लिखना वह भी इस बात का पग पग पर ध्यान रखते हुए कि कहीं चूक न हो जाए, कठिन कार्य था। यह कार्य समय और शोध दोनों की मांग करता है। मैंने इस मांग का सर्वथा ध्यान रखा और उर्वशी को लिखते हुए मैं अद्भुत अनुभूतियों से गुजरती रही। उर्वशी मतलब सूक्ष्म से विराट की ओर, उर्वशी मतलब एक ऐसी प्रेम कथा जो भारतीय यूरोपीय प्रेम कथाओं में प्राचीनतम है। जो सतयुग में पुष्पित पल्लवित होती है। जो प्रेम की ऐसी आंच से जन्मी है जिसके आगे सभी अग्नियां निस्तेज और फीकी हैं।

इससे फर्क नहीं पड़ता कि मैंने उस युग की घटनाओं को खुली आंखों से देखा है या नहीं। क्योंकि लेखक जब किसी पौराणिक या ऐतिहासिक प्रसंग पर काम करता है तो वर्तमान बहुत पीछे छूट जाता है और अतीत सामने साकार होने लगता है। इस अतीत पर, चयनित प्रसंग पर बहुतों ने लिखा है और उर्वशी पर तो विपुल साहित्य लिखा गया है। इसलिए मुझे बहुत सतर्कता बरतनी पड़ी। कहीं लिखे हुए का दोहराव न हो। कथा तो मुझे उर्वशी पुरूरवा की ही लेनी थी लेकिन लेखन दृष्टिकोण मेरा अपना ही होना चाहिए। जैसे एक विस्तृत भूभाग पर तरह-तरह के भवनों का निर्माण होता है किंतु उद्देश्य भवन निर्माण ही होता है, मुझे भी अपने भवन का निर्माण करना था। अतः

कथा को खंगालते हुए मैं उन बिंदुओं तक पहुंची जो अभी अछूते थे लेकिन उन बिंदुओं की वास्तविकता पर ही मुझे काम करना था चमत्कारों पर नहीं।

उर्वशी के संग संग च्यवन ऋषि और सुकन्या पर भी लिखना आवश्यक था क्योंकि ये सभी पात्र आपस में मिलकर ही कथा को पूर्णता प्रदान करते हैं ।वैसे भी कथाओं का अपना संसार होता है फिर चाहे वास्तविकता हो या महज कल्पना उनमें एक सूत्रता होती है जो पात्रों को जोड़े रखती है। कथा में पात्रों का चरित्र महत्वपूर्ण है या पल-पल बदलती घटनाओं का क्रम यह कहना कठिन है। क्योंकि दोनों ही आपस में ऐसे गूंथे रहते हैं कि उनका अलग-अलग विश्लेषण करना कठिन हो जाता है। उर्वशी पुरुरवा की कथा भी इसी स्वरूप में गढ़ी गई है जिसमें समस्त पात्रों का आपस में जुड़े रहना निश्चय ही कथा को पूर्णता की ओर ले जाता है। उर्वशी जिन-जिन लोगों से मिलती है और जिनके कारण पृथ्वी पर पुरुरवा के साथ दीर्घ समय तक यह प्रेमकथा विकसित होती है उन सब का कथा में उल्लेख करना आवश्यक लगा।

उर्वशी अप्सरा है । भूख प्यास सर्दी गर्मी अपनी परछाई से परे एक शाश्वत स्वरुप। वह देवलोक की संस्कृति का अंग है। एक चंचल स्त्री के समस्त गुण नृत्य, अभिनय, गायन, वादन, अप्रतिम सौंदर्य का प्रतिमान उसमें मौजूद है। किंतु भिन्न संस्कृति में पली बढ़ी भी वह अपने माहौल में बदलाव लाने के लिए तत्पर रहती है। अतः अपनी सखियों के संग भूलोक में प्रायः भ्रमण करती नजर आती है ।उसे देवलोक और भूलोक

में परस्पर तुलना करने में आनंद आता है। देवलोक में तो सब कुछ शाश्वत है। हर सुख, हर आनंद निरंतर बना रहता है। किंतु भूलोक में सृजन और लुप्त होने की क्रिया उसे लुभाती है। रात्रि में आकाशीय मार्ग से ओस का पुष्पों की पंखुड़ियों में, धरती के कण-कण में बूंद बनकर उतरना और सूर्य रश्मियों के मादक स्पर्श से उसी में समाहित हो जाना, पुष्पों का कली रूप में प्रस्फुटित होना, फिर मुरझाना और हवा के संग बिखर जाना ।सब कुछ कितना आकर्षक, कितना मोहक लगता है। वह पृथ्वी पर दीर्घकाल तक यह सुख भोगना चाहती है लेकिन कैसे?

इसके पहले पुरुरवा का उल्लेख भी आवश्यक है। वे प्रतिष्ठानपुर के बेहद शक्तिशाली ,प्रतापी, सुदर्शन और वीर राजा थे। प्रतिष्ठानपुर प्रयागराज के निकट था। देवताओं के अधिकार क्षेत्र में दानव जब भी उत्पात मचाते पुरुरवा को ही सहायता के लिए पुकारा जाता था। घने अरण्यों में ऋषियों, तपस्वियों के आश्रम तथा उनके द्वारा किए जाने वाले यज्ञ, हवन आदि की सुरक्षा भी वे करते थे। तथा उनके आश्रमों में अन्न, दूध, फल आदि की व्यवस्था करना भी उनकी ही जिम्मेदारी थी । जैसे उर्वशी को भूलोक आकर्षक लगता था वैसे ही पुरुरवा को देवलोक। वे प्रायः रथारूढ होकर बादलों में भ्रमण करते हुए देवलोक पहुंच जाते थे और इंद्र की सभा में सम्माननीय अतिथि के रूप में विराजते थे। इंद्र तो सुरा, सुंदरी के आदी। वे इंद्र के साथ सुरा का पान करते हुए देवलोक की अप्सराओं के नृत्य, नाटक आदि का आनंद लेते थे। यहीं

उन्होंने उर्वशी का नृत्य देखा और उसके रूप पर तन मन वार बैठे। उर्वशी भी देवराज इंद्र के मुख से उनकी प्रशंसा सुन उनके सुदर्शन व्यक्तित्व पर मोहित हो गई और उनके सहवास में भूलोक में दीर्घ जीवन जीने की लालसा कर बैठी।

वह पूर्ण चंद्र की बड़ी मोहक रात्रि थी जब उर्वशी अपनी सखियों के साथ भूलोक में भ्रमण करने आई। लेकिन तभी उर्वशी के सौंदर्य को देखकर उसे पाने की लालसा में केसी नामक दानव सखियों समेत उर्वशी का अपहरण कर अपने रथ को तीव्र गति से चलाता हुआ भागने लगा। स्वयं को विपत्ति में घिरा देख उर्वशी सहायता के लिए जोर-जोर से पुकारने लगी। उसकी पुकार अरण्य में भ्रमण कर रहे पुरूरवा तक जाती है और वे तत्काल सहायता के लिए तत्पर केसी के रथ तक अपना अश्व दौड़ाते हुए उसे युद्ध के लिए ललकारते हैं। केसी और पुरुरवा के युद्ध में जब बार-बार उर्वशी की छीना झपटी होती है उस स्पर्श ने ही पुरूरवा और उर्वशी के मन में प्रेम का बीज बो दिया।

युद्ध में पराजित केसी भाग जाता है और उर्वशी सखियों समेत पुरूरवा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती देवलोक प्रस्थान करती है और पुरुरवा प्रतिष्ठानपुर। यह प्रथम मिलन भले ही अनुकूल परिस्थितियों में नहीं हुआ किंतु प्रेम का बीज पनपने का कारण अवश्य बना।

कौन जानता था कि उर्वशी और पुरुरवा के मन में अंकुरित यह प्रेमकथा विश्व की प्राचीनतम कथा होगी।

ऋग्वेद में आयी वैदिक संस्कृति की पहली कथा उर्वशी और राजा पुरुरवा की कथा है। इसका काल विद्वानों ने 1600 ई.पू. माना है। दो भिन्न संस्कृतियों की टकहराट की प्रतीक बन गयी है यह मार्मिक प्रणय-गाथा।

ऋग्वेद के दशम मंडल के 95 वें सूत्र में उर्वशी पुरूरवा के प्रेम का वर्णन है....

किमेता वाचा कृणवा तावहं प्राकमिषभृषसाम ।

ग्रिंथेव पुरुखः पुनरस्तं परेहि दुरापना बात इवाहमस्मि ।।

यह प्रसंग 18 ऋचाओं का है जिसमें पुरूरवा उर्वशी के बीच संवाद बिना किसी भूमिका के आरंभ होता है। इन ऋचाओं में न कोई क्रम है न तर्क। दोनों के बीच के संवाद भी विचित्र हैं। कोई तालमेल नहीं है उनके संवादों में ।विद्वानों ने इन ऋचाओं की अपनी तरह से व्याख्या की है।

यजुर्वेद में भी उर्वशी पुरुरवा के कुछ संदर्भ हैं यह कि पुरुरवा चंद्रवंशी है। वे एक तेजस्वी सूर्य है और उर्वशी उसकी एक रश्मि है ।इस तरह दोनों अग्नि के समान तेजस्वी हैं ।इंद्र की अनेक अप्सराये हैं। उनमें उर्वशी भी एक है। पुरुरवा उर्वशी और दोनों का पुत्र आयु तीनों को यजुर्वेद में अग्नि कहा गया है।

अग्नेर्जनित्रमसि वृषणौ स्थ उर्वस्य स्यायुरसि पुरुरवा असि । गायत्रेण त्वा छंदसा मन्थामि, त्रैष्ट्मेन त्वा छन्दसा मन्थामि जागतेन त्वा छन्दसा मन्थमि ।

हे शकल ! आप अग्नि उत्पादक के आधार हैं। हे कुशाओं ! आप उत्पन्न करने में सक्षम होने के कारण वीर्य स्वरूप हैं। अग्नि को उत्पन्न करने में सहायक नीचे की शमी उर्वशी के समान तथा ऊपर की शमी पुरुरवा के समान सबका ध्यान आकर्षित करने वाले हैं।' यहाँ अग्नि को सम्बोधित करके कहा है कि तू उर्वशी है, तू आयु है और तू पुरुरवा है। तुझे गायत्री, त्रैष्ट्रम और जगती छन्दों से मथकर निकालता हूँ। यहाँ आयु उर्वशी और पुरुरवा के पुत्र का नाम और उर्वशी और पुरुरवा अग्नि है। अग्नि से अग्नि की ही उत्पत्ति होती है इसलिए आयु भी अग्नि है।

वेदों में वर्णित ये सूत्र उर्वशी और पुरुरवा की प्रेमकथा कहते हैं । इन्हीं को आधार बनाकर साहित्यकारों ने अपने अनुसार लिखा है। भाष्यकारों ने अपने अनुसार भाष्य किया है । इस तरह साहित्यकारों की लेखनी से कल्पना, मिथक और परिकल्पनाओं में उर्वशी और पुरुरवा की कथा विकसित होने लगी।

वैदिक साहित्य में वेदों के बाद सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रंथ ब्राह्मण ग्रंथ है। ब्राह्मण ग्रंथ में शतपथ ब्राह्मण में उर्वशी पुरूरवा की कथा है। लेकिन है बहुत अद्भुत ,यह कि उर्वशी पुरूरवा से प्रेम करती थी और पृथ्वी लोक में कुछ काल तक पुरुरवा के पास अपनी शर्तों सहित रही। उसकी शर्तें थी…

कि उसके दो मेमने सदा उसके शयन कक्ष में बंधे रहेंगे और उनकी सुरक्षा पुरुरवा को करनी होगी।